चलता-फिरता हैट

एन. नोसोव

होल्गर पुक्क

चलता-फिरता हैट

एन. नोसोव

होल्गर पुक्क

हिन्दी रूपान्तर : कविता/सत्तू प्रसाद
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 15 रुपये

पहला हिन्दी संस्करण : जनवरी, 2008

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी-68, निरालानगर

लखनऊ-226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

चलता-फिरता हैट

एन. नोसोव

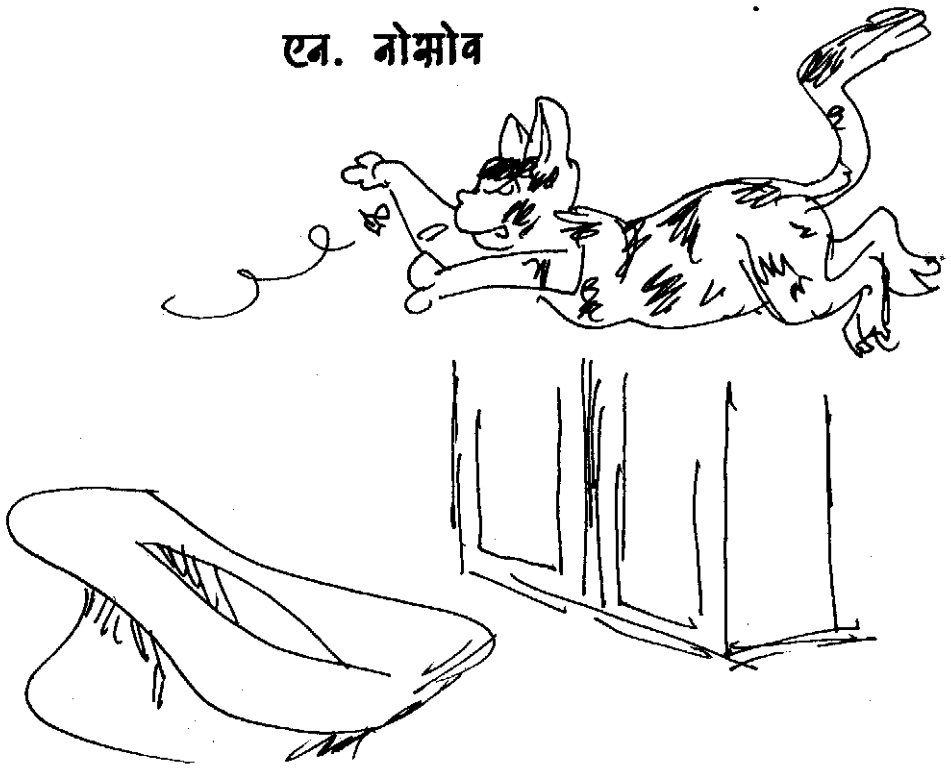

चिक्कू एक बिलौटा था। वह अल्मारी के सामने फर्श पर बैठकर एक मक्खी को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। अल्मारी के बिल्कुल किनारे पर एक हैट रखा हुआ था। चिक्कू ने मक्खी को उस पर बैठे हुए देखा। वह कूदा और अपने पंजे से हैट को जकड़ लिया। लेकिन हैट अल्मारी से सरक गया। चिक्कू की पकड़ ढीली हो गई और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। फिर हैट उड़ते हुए उसके ऊपर आ गिरा। अब चिक्कू कहाँ था?

शेखर और मयंक अपनी कपरिंग बुक में व्यस्त थे। वे हैट को चिक्कू पर गिरते हुए देख नहीं पाये थे, हालाँकि उन्होंने कुछ अजीबोगरीब आवाज ज़रूर सुनी थी।

शेखर यह देखने के लिए मुड़ा कि क्या हुआ। फर्श पर हैट पड़ा हुआ था। वह उसे उठाने के लिए गया। लेकिन जैसे ही वह नीचे झुका चिल्ला उठा–

"कोई मेरी मदद करो!"

"क्या हुआ?" मयंक ने पूछा।

"यह जीवित है!"

"कौन?"

"ह-ह-हैट!"

"क्या बेवकूफी है?"

"ल-ल-लेकिन यह है!"

मयंक उसे देखने के लिए उठा।

अचानक हैट उनकी ओर सरकने लगा। मयंक चीखा और दौड़कर सोफे पर चढ़ गया। शेखर उसके दाहिनी ओर कूद गया। इसी बीच हैट रेंगते हुए कमरे के बीचोबीच रुक गया। यह सब देखकर लड़कों का दिल धड़कने लगा। हैट उनकी ओर बढ़ रहा था।

"ओह!"

"बचाओ!"

वे नीचे कूदे और तेजी से कमरे के बाहर भागे। जैसे ही वे रसोईघर में पहुँचे उन्होंने अपने पीछे दरवाजे को धड़ाम से बन्द कर लिया।

"ये हैट का क्या माजरा है? क्यों यह चारों ओर चहलकदमी कर रहा है?" शेखर ने आश्चर्य से कहा।

"सम्भवतः कोई उसे डोरी से खींच रहा हो।" मयंक ने कहा।

"जाओ जाकर देखो।" शेखर ने कहा।

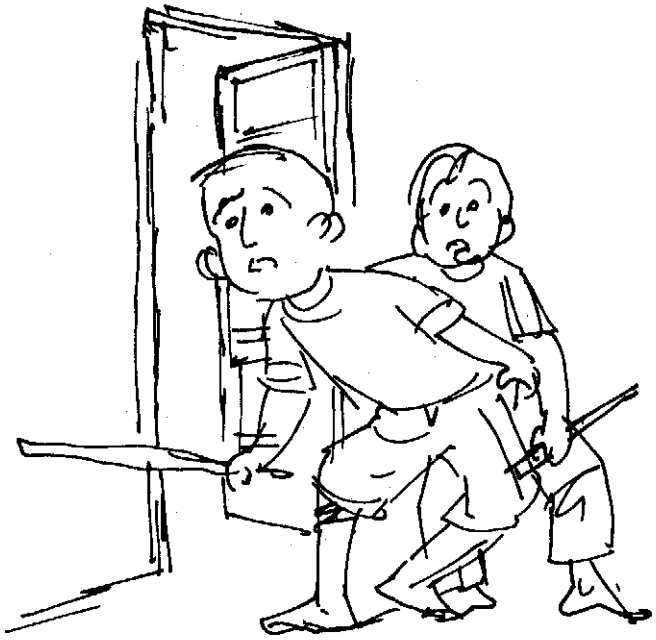

"चलो साथ चलते हैं। मैं एक कुरेदनी ले लेता हूँ। अगर वह फिर हमारी ओर बढ़ेगा तो मैं उसे जोर से मारूँगा।"

"रुको! मैं भी एक कुरेदनी लेता हूँ!"

"हमारे पास केवल एक ही है!"

"फिर मैं एक बड़ी छड़ी ले लेता हूँ!"

उन्होंने खुद को कुरेदनी और छड़ी से लैस किया, धीरे से दरवाजा खोला और बाहर देखा।

"कहाँ है वह?"

"वहाँ पर कोने में।"

हैट वहीं फर्श पर पड़ा हुआ था।

"देखा? यह अब हमसे डरने लगा।"

"देखो मैं इसे भगाता हूँ," शेखर ने कहा।

उसने अपनी कुरेदनी से मेज के पाये के सामने पीटना शुरू कर दिया।

"तुझे मैं देख लूँगा!"

लेकिन हैट टस से मस नहीं हुआ।

"चलो आलू से मारें!" मयंक ने कहा।

वे रसोईघर से आलू लाये और हैट पर फेंकना शुरू कर दिये। अन्ततः मयंक ने मारा। हैट हवा में उछला और कराहा : मियाऊँ!

किनारे से धूसर पूँछ का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था।

"चिक्कू!" लड़के चिल्ला उठे।

मयंक ने बिलौटे को पकड़कर गले से लगा लिया।

"बेचारे चिक्कू! तुम हैट के नीचे कैसे आ गये थे?"

लेकिन चिक्कू कुछ नहीं बोला, वह केवल घुरघुराया और अपनी चमकीली आँखें झपकाने लगा।

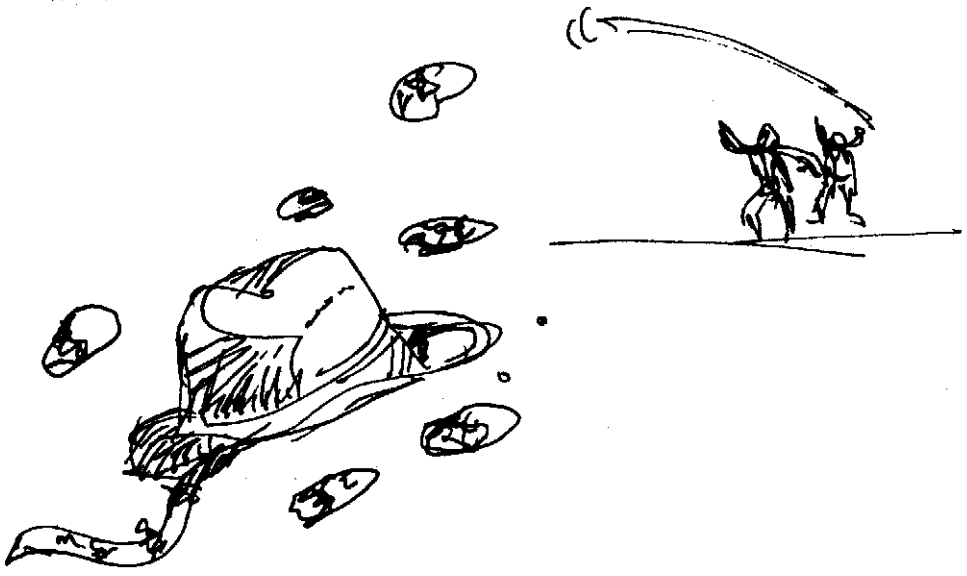

इस बारे में मैं कुछ नहीं कर सका

होल्गर पुक्क

मैं प्लेट में आराम से पड़ा हुआ था और मेरी सुनहरी चिकनी आँखों को वेली कनखी से देख रही थी। ओह! कितना बढ़िया मेरा स्वाद था। रसोइये ने मुझे बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ों से बनाया था—सूज़ी, दूध, मक्खन, चीनी, किशमिश।

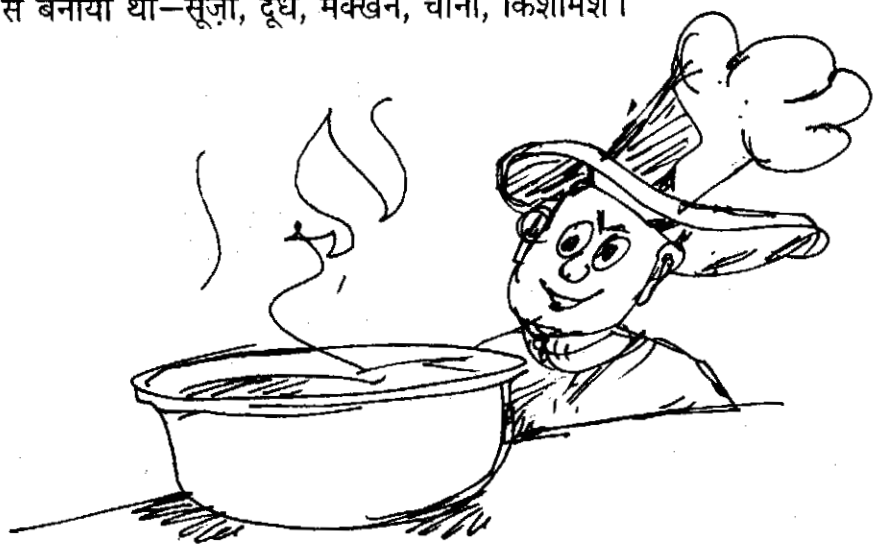

लेकिन वेली ने चम्मच से मुझे कुरेदा और छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये। जैसे कि मैं कोई बेस्वाद सी चीज़ था। उसने उठाया और जैसे ही चम्मच से मुँह में डाला उसने ध्यान दिया कि अन्य सभी बच्चों की प्लेंटे खाली हो चुकी हैं। वह सर्तक होकर जेब में मुझे डाल लिया।

टीचर ने उसे यह सब करते हुए नहीं देखा। उन्होंने अपनी पूरी पुडिंग खत्म करने के लिए वेली की तारीफ की।

फिर हम सोने के लिये सीढ़ियों के ऊपर गये।

मेरी सुन्दर, सुनहली, मक्खनी आँखें अदृश्य हो गयीं। उसकी जेब के अन्दर से मैं टपकने लगा और सीढ़ियों पर, वेली की फ्राक में, मोजे में और उसकी चप्पलों के नीचे फैल गया।

ऊपर के आराम घर से वेली ने अपनी पोशाक उठायी और मुझे बुरी तरह फेंक दिया। दूसरे बच्चे जो उधर से फर्श पर गुजर रहे थे। अनजाने ही अपने कदमों से मुझे कुचल दिया और मैं उनके जूते के तलवे में चिपक गया। जल्दी ही मैं सब जगह उपस्थित था। खिड़की पर, बिस्तर के बीच में, फर्श के मध्य में यहाँ तक कि बिस्तर में भी। मेरी वजह से तकिये, कम्बल, मोजे, कुर्सी, मेज सभी मैले हो गये। मैं जानता था कि यह शरारत मेरी वजह से हुई लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था।

जब टीचर आयीं तो उन्होंने वेली को खूब फटकारा। महरी ने मुझे उठाया और जो कुछ मैं शेष बचा था, उसे उठाकर भयंकर कूड़ेदान में फेंक दिया।

अब मैं यहाँ हूँ। मेरे जीवन का यह सबसे दुखद अन्त था। फिर भी मैं अपनी सुनहरी चिकनी आँखों वाला बहुत ही स्वादिष्ट पुडिंग था।

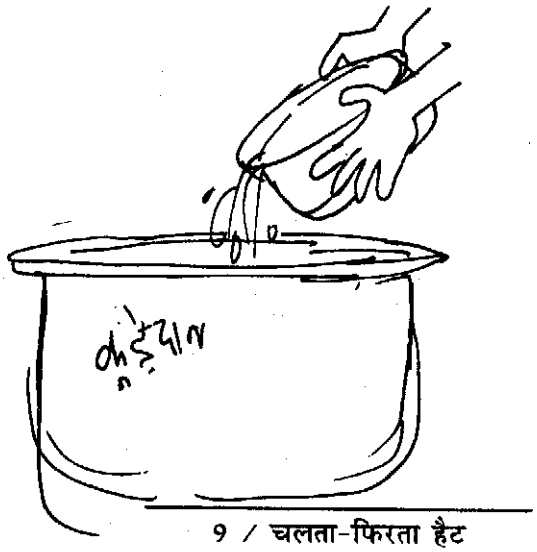

मेरा दुर्भाग्य

होल्गर पुक्क

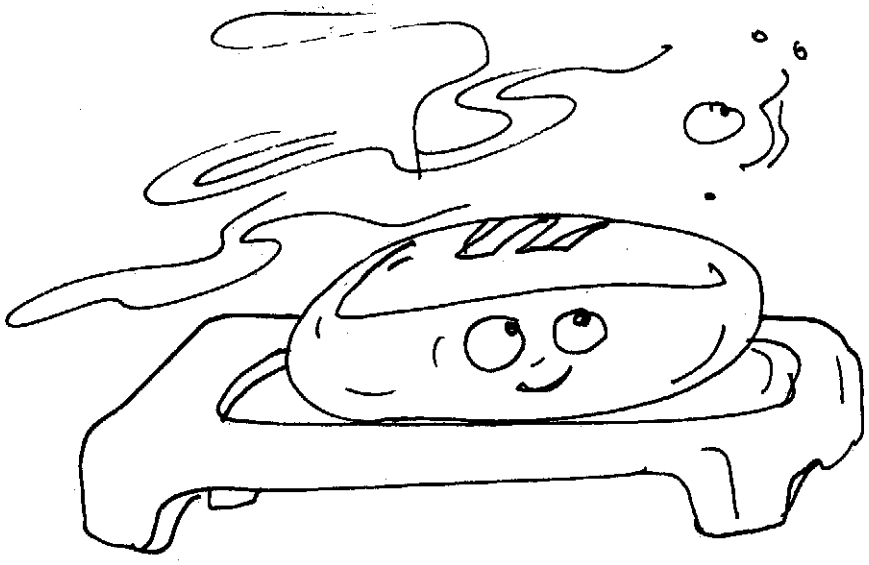

मैं एक सुन्दर साबुन की टिकिया था। गोल और गुलाबी। और बहुत ही सुगन्ध से भरा हुआ। निश्चित ही अपनी इतनी तारीफ करना अच्छी बात नहीं है। यह शेखी बघारने जैसी बात है, लेकिन मैं वाकई बहुत बढ़िया साबुन की टिकिया था।

महरी ने मुझे उठाया और वाशबेसिन के पास रख दिया। मैं बहुत उत्सुक था झाग फेंकने के लिए। टर्मो वाश-बेसिन के पास आया। उसने नल खोला और मुझे उठा लिया। अपने शरीर पर ठण्डा पानी पड़ने से मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा था।

मैंने झाग फेंकना शुरू किया और बहुत ही बढ़िया खुश्बू फैल गयी।

तभी टर्मो ने अपनी हथेली को बहुत ज़ोर से दबाया और मैं हवा में उछल गया। यह मेरे लिए बहुत ही भयावह था। सौभाग्य से उसने मुझे फिर से पकड़ लिया।

मैंने पहले सोचा यह अचानक ही हुआ होगा लेकिन मैं गलत था, ऐसा जानबूझ कर किया गया था। उसने फिर मुझे छोड़ दिया। और फिर छोड़ दिया, और फिर छोड़ दिया... और फिर...।

मैं मृत्यु से बुरी तरह डर गया और झाग फेंकना भूल गया।

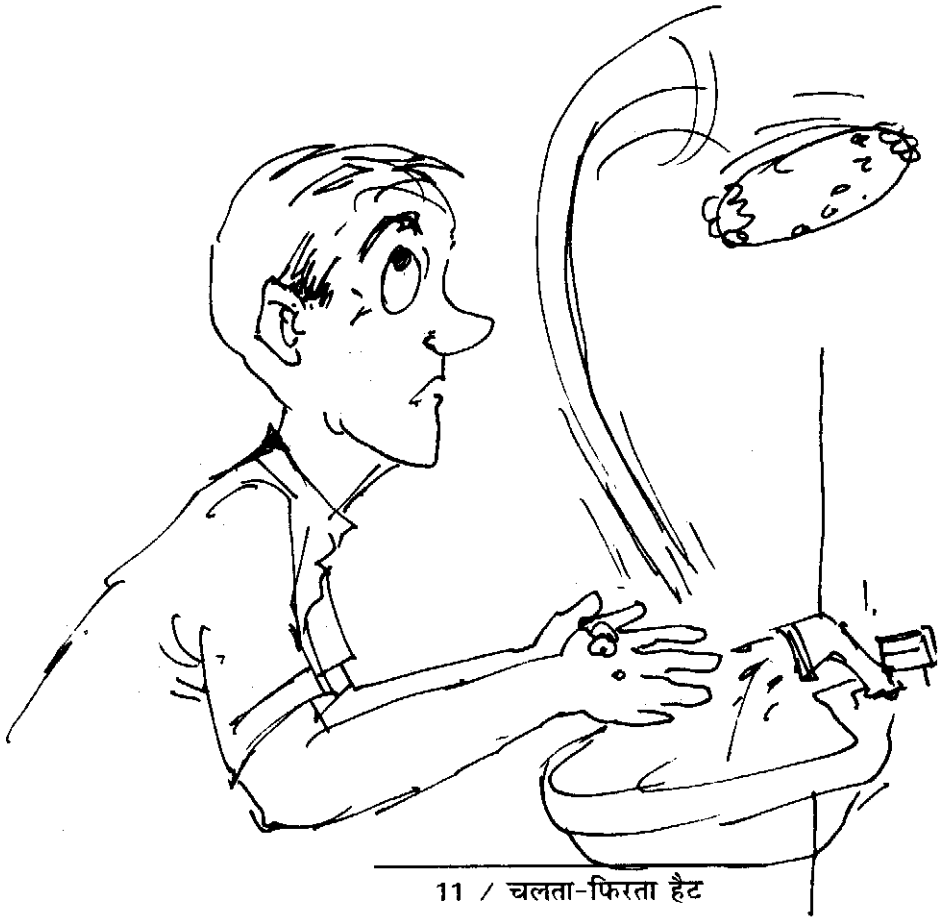

अन्ततः मैं एक धमाके के साथ फर्श पर गिर पड़ा। इससे पहले कि टर्मो मुझे उठाता, कुर्लो दौड़ता हुआ आया और मेरे ऊपर फिसल पड़ा।

बहुत आसान है यह जानना कि क्या हुआ होगा। कुर्लो नीचे गिर पड़ा और रोने लगा। मैं फर्श से उछलकर लॉकर के नीचे पहुँच गया।

अब मैं भयंकर दिख रहा था। पूरी तरह टूटा-फूटा और धूल-मिट्टी से सना हुआ। मैं डर गया कि अब मैं कभी भी झाग नहीं फेंक सकता और किसी को फिर से साफ नहीं कर सकता।

मुझे अपने लिए भी दुख था और दूसरों के लिए भी। मैंने सुना—कुर्लो चिल्ला रहा है। वह अपने घुटने को साफ कर रहा था।

बच्चे जब लंच के लिए कमरे में आए तो मैंने टीचर को उन्हें (उन बच्चों को) डाँटते हुए सुना। उनके हाथ गंदे थे क्योंकि मैं गुम हो गया था। मैंने प्रिंसिपल को महरी से कहते हुए सुना कि वाशरूम में कोई साबुन क्यों नहीं है?

मैं बहुत दुखी था, लेकिन मैं गुस्से में भी था। भयंकर गुस्से में। अगर मैं कभी लॉकर के नीचे से बाहर आ पाता तो अपने रिश्तेदारों के पास जाकर कहता—

"कभी भी टर्मो के हाथ में झाग मत छोड़ना, और कभी भी उसे साफ मत करना। उसे वैसा ही गन्दा बने रहने देना जिसे कोई पसन्द नहीं करता।"

साधारण साइमन काम पर गया

धूर्त और चालाक लोगों की कहानियाँ मशहूर होती हैं और उतनी ही मशहूर होती हैं नौजवानों और गोबरगणेशों की कहानियाँ। यें भी एक ऐसी ही कहानी है। ये कहानी है इंग्लैण्ड के एक लड़के की जिसका नाम साइमन था। जीने के उसके अन्दाज साधारण होने की वजह से लोग उसे साधारण साइमन बुलाते थे।

साइमन अपनी माँ के साथ इंग्लैण्ड के एक पिछड़े इलाके में रहता था। उसके पिता की मृत्यु हो गई थी इस वजह से उसकी माँ को उसके और खुद के खाने पहनने के इन्तजाम में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

जब साइमन बड़ा हो गया और काम करने लायक हो गया तब उसकी माँ ने उसे एक भले बुजुर्ग व्यक्ति के यहाँ काम पर लगा दिया। साइमन के अच्छे काम से खुश होकर उस भले बुजुर्ग व्यक्ति ने उसे पुरस्कार में एक बड़ा-सा सोने का टुकड़ा दिया। साइमन उस बड़े सोने के टुकड़े को उठाकर घर की ओर चला। लेकिन गर्मी बहुत ज्यादा थी और वो थका हुआ था।

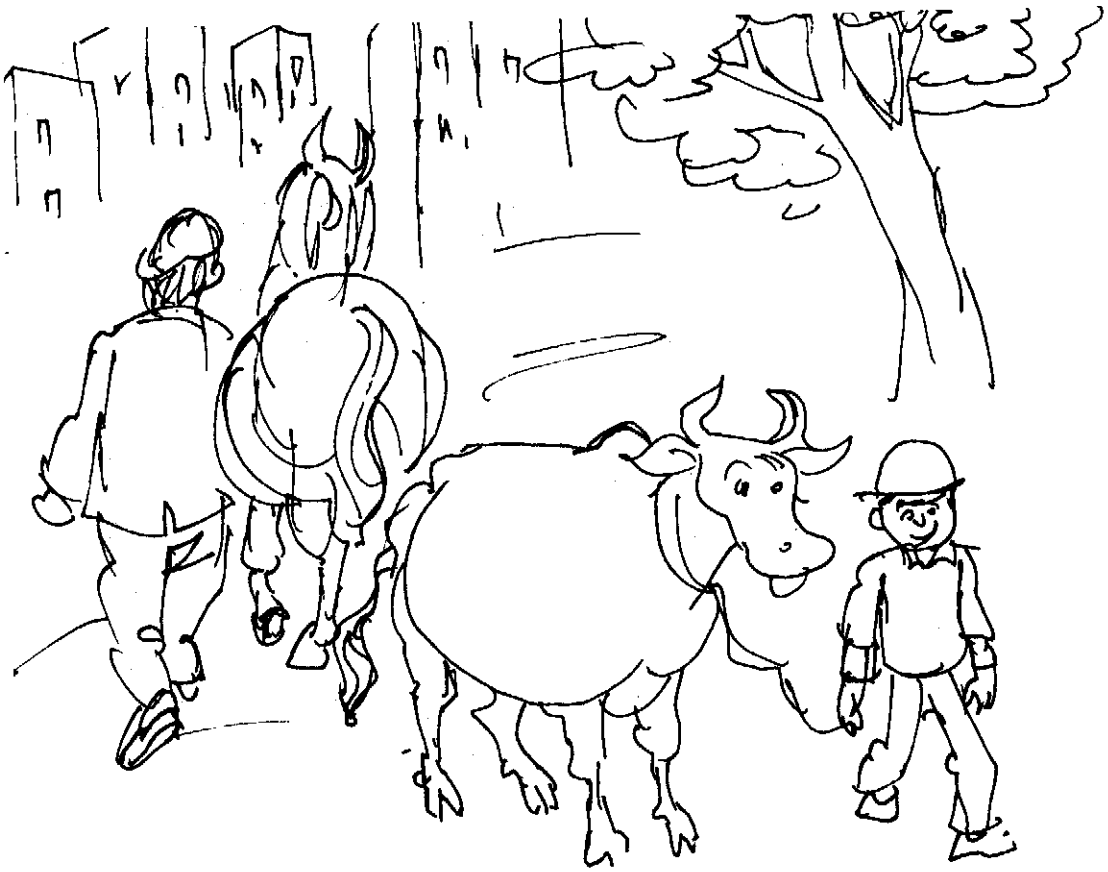

चलते-चलते उसकी मुलाकात एक घुड़सवार से हुई। साइमन ने सोचा कि वो घोड़े पर सवार होकर घर जल्दी पहुँच सकता है। इसलिए उसने उस घुड़सवार को सोना देकर घोड़ा ले लिया। जब वो घोड़े पर सवारी करते-करते थक गया तो घोड़े से नीचे उतर आया। तन घोड़े ने उसे दुलत्ती मारी और भागने लगा। सही समय पर उसने घोड़े को पकड़ लिया। वह उसे खींचता हुआ आगे चला। आगे रास्ते में उसकी मुलाकात एक किसान से हुई। किसान के पास गाय थी। साइमन ने सोचा कि क्यों न घोड़े को गाय से बदल ले, गाय दूध देती है और दुलत्ती भी नहीं मारती। और उसने घोड़े के बदले गाय ले ली।

लेकिन जब साइमन ने गाय से दूध दुहने की कोशिश की, तब गाय ने दूध नहीं दिया। तभी उधर से एक आदमी अपने सुअर के साथ बाजार की ओर जा रहा था। उसने साइमन

को सुअर के बदले गाय लेने के लिए मनाया और वो बड़ी आसानी से मान गया।

साइमन सुअर को अपने घर की ओर ले जाने को खींच रहा था लेकिन सूअर उल्टी दिशा में जाने के लिए अड़ गया था। उसी समय उधर से एक आदमी अपनी बत्तख के साथ जा रहा था। साइमन ने सुअर के बदले बत्तख लेने का इरादा किया और बत्तख लेकर घर की ओर बढ़ने लगा।

जब वो घर पहुँचने ही वाला था, संयोग से उसे एक आदमी मिल गया जिसके पास चक्की का पत्थर था। उसने साइमन से कहा "बत्तख तो मामूली पक्षी है, लेकिन हर किसी के पास चक्की नहीं होती"। इसलिए साइमन ने बत्तख के बदले चक्की का पत्थर ले लिया। लेकिन उसे यह सोने के टुकड़े से ज्यादा भारी लगा। इसलिए उसने चक्की को अपने घर के बाहर के कुँए में फेंका और हल्के शरीर और हल्के दिमाग से अपनी बूढ़ी माँ के पास चला गया।